सखियों मंगल गावो ये ।
सतगुरु आज पधारिया चरणां पड़ जावो ये ॥टेर ॥
पग पाँवड़ा करो तन मन से, ह्रदय बिछावो ये ।
चरण धोय नैणा के जल, चरणामृत पावो ये ॥1॥
नम्र भाव का जल लेकर के, स्नान करावो ये ।
पाँच तीन का वस्त्र टेक, टोपा पहनावो ये ॥2॥
चित का चन्दन घोटकर, मस्तक चिर्चाओ ये ।
धर्म, अर्थ और काम मोक्ष के, पुष्प चढ़ाओ ये ॥3॥
इड़ा पिंगला साजकर, दो दीप जलावो ये ।
अग्नि, ज्ञान की ल्याय ध्यान को धूप जलावो ये ॥4॥
नवघा भक्ति की बाती कर, आरती सजाओ ये ।
अनहद घण्ट बजाय कर, उन मुन धुन ल्यावो ये ॥5॥
अमी झरै दिन रैन, ताहि का भोग लगावो ये ।
धार दानता प्राण वायु का, चवँर दुलावो ये ॥6॥
शिखर महल के माय सुषम्ना सेज बिछाओ ये ।
सोहं सांह गाय कर गुरुदेव रिझायो ये॥7॥
अमृत भेद अपार है सहजांही लख पावा ये ।
सुरति ठिकाणै ल्याय कर शंकर गुण गावां ये ॥8॥